IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

कार्यकारी महिलाओं की प्रजनन क्षमता का समाजशास्त्रीय अध्ययन

कुमारी बबिता (NET)

शोध छात्रा, समाज शास्त्र विभाग, राँची विश्वविद्यालय, राँची

सारांश

बदलते परिवेश में महिलाएं पुरूषों से कंधे से कंधा मिलाकर अपनी भागीदारी सुनिश्चित कर रही हैं। आज महिलाओं की भूमिका में परिवर्तन हो रहा है। महिलाएं शिक्षित हो रही हैं तथा अपने आर्थिक आय के संसाधनों को बढ़ाने के लिए सरकारी व गैर सरकारी उपक्रम में कार्य कर रही है। कानूनी रूप से महिलाओं को को पुरूषों के समान अधिकार दिया गया है किंतु अनेक परंपराओं व लिंग भेद के फलस्वरूप महिलाओं को अनेक परेशानियों का सामना करना पड़ता है। इसी क्रम में कुछ महिलाएं हिंसा व शोषण का भी शिकार होती है समय के बदलाव के साथ साथ महिलाओं में जागरूकता आई है वे शिक्षा के प्रति जागरूक हुई हैं। अपने कर्तव्यों के प्रति जागरूक हुई हैं। पढ़ाई लिखाई कर समाज में नौकरी के माध्यम से अपनी उपस्थिति दर्ज करा रही हैं।

आज का समय पूर्व से बेहतर हो गया है पहले समाज में महिलाओं को पर्दा के अंतर्गत रखा जाता था लेकिन आज महिला और पुरूष दोनों कार्य करने के साथ–साथ प्रसन्न है तथा पत्नी के कार्य करने को या घर के बाहर निकलने का अभिशाप ना मानकर गर्व समझा जाता है। आज महिलाएं केवल बाहर के कार्य तक ही सीमित नहीं है बल्कि परिवार को भी साथ लेकर चल रही हैं। कई बार उन्हें भूमिका संधर्ष भी करना पड़ता है जिसका प्रभाव महिलाओं के सामाजिक आर्थिक मानसिक व शारीरिक के साथ–साथ उनकी प्रजनन क्षमता पर भी पड़ता है। महिलाएं आज एक तरफ उत्पादन तो दूसरी तरफ प्रजनन जैसे दोहरे दायित्व का निर्वहन कर रही हैं। प्रजनन क्षमता में शिक्षा एक महत्वपूर्ण तत्व है। प्रजनन क्षमता को प्रभावित करने में शिक्षा प्रमुख भूमिका निभाती है। घटती जन्म दर शिक्षा में वृद्धि का एक कारण है। शिक्षित व्यक्ति समाज में अपनी प्रतिष्ठा बनाए रखने के लिए व्यस्त रहता है जिससे वैवाहिक संबंधों में उचित समय नहीं दे पाता और प्रजनन का समय भी कम मिल पाता है। वैवाहिक आयु भी प्रजनन क्षमता को निर्धारित करने में अपनी भूमिका निभाती है। कम उम्र में विवाह प्रजनन दर को बढ़ाता है तथा अधिक उम्र में विवाह प्रजनन दर को कम करता है संक्षिप्त परिवार की भूमिका भी प्रजनन क्षमता पर प्रभाव डालती है पुरूष प्रधान समाज में लड़के का होना आवश्यक समझा जाता है इस कारण से यदि पुत्रियां उत्पन्न हो जाए तो लड़के के चाहत में अधिक बच्चे पैदा करते रहते हैं जिससे प्रजनन दर बढ़ जाती है। परिवार का आर्थिक स्तर भी प्रजननशीलता को प्रभावित करता है निर्धन परिवार प्रजनन दर को बढ़ाता है ताकि रोजगार हेतु श्रम उपलब्ध हो सके जबकि आर्थिक रूप से संपन्न परिवार संक्षिप्त परिवार रखने हेतु उत्सुक रहता है। इन कारकों के अतिरिक्त नगरीकरण सामाजिक गतिशीलता धर्म और सामाजिक रीति रिवाज तथा भौगोलिक कारण भी प्रजनन दर को प्रभावित करते हैं। कार्यकारी महिलाएं अनेकों समस्याओं से घिरे होने के बाद भी अपनी जिम्मेदारियों, अपने कार्यस्थल की जिम्मेदारियों, व्यक्तिगत स्वतंत्रता, बच्चों के देखरेख व समाज एवं परिवार के बीच सामंजस्य स्थापित किए हुए हैं।

कुट–शब्दः कार्यकारी महिलाएं, प्रजनन क्षमता, दोहरे दायित्व, उत्पादन, सामाजिक गतिशीलता, सामंजस्य

अध्ययन का उद्देश्य:

महिलाओं की स्थिति में प्राचीन काल से लेकर मध्यकालीन तथा वर्तमान काल तक कई परिवर्तन देखे गये है। पहले महिलाओं को चारदिवारी तक सीमित रखा जाता था परन्तु समय के बदलाव के साथ ही महिलाओं की शिक्षा पर जोर दिया जाने लगा है। उन्हें वे सभी अवसर दिये गये जो पुरूषों को दिये जाते थे। साथ ही अब महिलाएँ कार्य पर भी जाने लगी है। एक तरफ जहॉ ये हर्ष का विषय था वही दूसरी और महिलाओं की अन्य समस्याएँ भी सामने आने लगी है, जिसमें प्रमुख चिन्ता का विषय बना महिलाओं की प्रजननशीलता, प्रजननशक्ति आदि। कई आन्तरिक व बाह्यो कारणो से कार्यकारी महिलाओं की प्रजननशीलता प्रभावित होने लगी और यह बहुत बड़ी समस्या का रूप ले रही है। जिसकी समीक्षा वर्तमान परिप्रेक्ष्य में आवश्यक हो गया है यह अध्ययन इस दिशा में एक संक्षिप्त प्रयास है जिससे महिलाओं की प्रजननशीलता के बदलते प्रतिमानों के प्रति समाज को जागरूक किया जा सके।

अध्ययन क्षेत्र:

अध्ययन क्षेत्र के रूप में बोकारो शहर का चयन किया गया है। अध्ययन क्षेत्र के रूप में उस परिक्षेत्र का चुनाव किया जाना आवश्यक है, जहॉ कार्यकारी महिलाओं की पर्याप्त संख्या हो। बोकारो शहर प्रारम्भ में झारखण्ड राज्य के अन्तर्गत आता है। यहॉ पर सोवियत संघ के सहयोग से इस्पात संयत्र लगाया गया जोकि 1980 में बनकर तैयार हुआ और इस्पात का उत्पादन प्रारम्भ हुआ। वर्तमान में लगभग 4 मिलियन टन इस्पात का उत्पादन है इसलिए इसको स्टील सिटी भी कहा जाता है। यहा झारखण्ड राज्य का 24वां जिला है जो 1991 में धनबाद जिले से अलग करके बनाया गया है।

बोकारो 23026'' – 23057'' उत्तर अक्षांश और 85034'' – 86026'' पूर्व अक्षांश तथा समुद्र तल से 210 मीटर पर अवस्थित है। बोकारो अपलेंड (पश्चिमी भाग में) बोकारो – चास अपलैंड़ (मध्य भाग), दामोदर – बरकरार बेसिन (पूर्वी भाग), भौगोलिक विभाजन है, जिनमें से बोकारो चास अपलैंड़ जिले का प्रमुख भौतिक विभाजन है। इस अध्ययन में यह परीक्षण करने का प्रयास किया गया है कि बोकारों जैसे आर्थिक, सामाजिक तथा भौगोलिक संरचना वाले क्षेत्र में कार्यकारी महिलाओं की प्रजननशीलता का स्वरूप कैसा है। बोकारों शहर में कुल 9 वार्ड़ है जिसमें से शोधार्थी द्वारा 4 वार्ड़ का चुनाव किया गया है। प्रत्येक वार्ड़ में से 50–50 निदर्श के रूप में कार्यकारी महिलाओं का चुनाव किया गया है। अनुमण्ड़ल (चास और बेरमों) में विभाजन किया गया है। बोकारों जिले के अन्तर्गत कुल 9 प्रखण्ड़ और 9 अंचल है।

विष्लेषण एंवम व्याख्या:

महिलाओं के प्रजननशीलता प्रतिमान के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि प्रजननशीलता के प्रत्येक आयाम उनके कार्यकारी होने पर महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है चाहे स्वास्थ्य का क्षेत्र हो, कार्यस्थल हो, बच्चों का पालन पोषण हो, मानसिक तनाव हो, पारिवारिक द्वन्द हो, नौकरी का क्षेत्र हो, गर्भावस्था हो, निर्णय लेने की स्वतंत्रता हो, परिवार नियोजन से सम्बंधित निर्णय हो आदि। महिलाओं ने कार्यशीलता एवं नौकरी को अपनी प्रजननशीलता में बाधक बताते हुए सहायक भी बताया है लेकिन नौकरी को प्राथमिकता दिया है। अधिकतर महिलाओं ने नौकरी के पश्चात् गर्भधारण किया जिससे उनके कैरियर में व्यवधान उत्पन्न न हो सके। सुनिश्चित तरीके से गर्भपात के सम्बंध में महिलाओं ने हॉ कहा जिससे शिक्षा और जागरूकता के साथ स्वास्थ्य सेवा के आधुनिकीकरण को बल मिलता है। तथ्यों के विश्लेषण से पता चलता है कि अधिकतर महिलाओं ने बताया कि गर्भधारण के दौरान परिवार का सहयोग नही प्राप्त हुआ। अधिकतर महिलाओं ने कहा कि आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होने के कारण गर्भधारण करने में मदद प्राप्त हुई है। परिवार नियोजन के लिए अधिकतर महिलाओं ने गर्भ निरोधक गोलियों का इस्तेमाल करती है जो कि कार्यकारी महिलाओं के स्वास्थ्य एवं कार्य के अतिरिक्त परिवार को सीमित करने का प्रयास दिखता है। इसके अतिरिक्त उपकरणों एवं अन्य साधनों का भी प्रयोग किया जाता है। नौकरी जाते समय बच्चों का पालन पोषण आया द्वारा अधिकतर किया जाता है। इसके अतिरिक्त स्वयं महिलाओं द्वारा एवं परिवार द्वारा भी किया जाता है। अधिकतर महिलाओं ने बताया कि बच्चों का पालन पोषण एकांकी परिवार द्वारा किया जाता है जबकि कुछ ने संयुक्त परिवार के साथ अन्य द्वारा भी बताया है। कार्यकारी होने के कारण अधिकतर महिलाओं ने बताया कि गर्भधारण करने में कठिनाई आयी है जबकि कुछ ने नही बताया है। महिलाओं ने बताया कि शिक्षित होने का प्रजननशीलता पर अच्छा प्रभाव पड़ा जबकि कुछ ने सामान्य प्रभाव बताया है। लगभग 50

प्रतिशत ने मत प्रकट किया कि आर्थिक आय (समृद्धि) प्रजननशीलता में चिकित्सीय जाँच हेतु सहायक रही है। अधिकतर महिलाओं ने बताया कि कार्यकारी होने के कारण समाज एवं परिवार के प्रतिष्ठा में वृद्धि हुई है। महिलाओं ने मत प्रकट किया कि स्वयं एवं पति के कार्यशील होने के कारण परस्पर अच्छा, बहुत अच्छा एवं संतोषजनक सहयोग रहा है। अधिकांश महिलाओं ने बताया कि आर्थिक निर्भरता महिलाओं के प्रति होने वाले दुर्व्यवहार में कमी लाता है। अधिकांश महिलाओं ने मत प्रकट किया कि महिलाओं की शिक्षा परिवार नियोजन में सहायक होती है। जबकि कुछ ने कहा कि नही और छः प्रतिशत ने कुछ भी नही बताया। अधिक से अधिक पचास प्रतिशत महिलाओं ने बताया कि कार्यकारी होते हुए गर्भधारण के दौरान मातृत्व अवकाश, अन्य योजना, गैर सरकारी योजना का लाभ लिया। अधिकांश महिलाओं ने अपने बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिए योजना बनाई है। कार्य के प्रति घरवालों के दृष्टिकोण के सम्बंध में मात्र साढ़े सैतीस प्रतिशत ने बुरा एवं पैंतीस प्रतिशत ने अच्छा एवं कुछ ने सामान्य बताया है। अधिकांश महिलाओं ने वर्तमान समय में कार्यकारी होना आवश्यक बताया है। चालीस प्रतिशत महिलाओं ने अच्छा, पैंतीस प्रतिशत ने सामान्य एवं पच्चीस प्रतिशत ने बुरा बताया है। परिवार से दूर रहकर धन कमाने के विषय में परिवार वालो का दृष्टिकोण। पैंतीस प्रतिशित महिलाओं ने कार्यकारी होने के नाते घरेलू कार्यो को वरियता दिया, इसके अतिरिक्त कुछ ने घर के बाहर कार्य को भी वरियता दिया। पचपन प्रतिशत ने बताया कि कार्यकारी होने के बावजूद घरेलु हिंसा की शिकार हुई है। शेष कभी कभार एंव कुछ घरेलु हिंसा की शिकार नही हुई है। महिलाओं ने बताया की गर्भधारण करने के फैसले में स्वयं पति एंव ससुराल के अन्य सदस्यो की राय महत्वपूर्ण होती है। अधिकतर महिलाओं ने बताया की कार्यालय में क्रैच की सुविधा उपलब्ध नही है। अधिकांश महिलाओं ने बताया की परिवार ने परिवार नियोजन हेतु प्रोत्साहित किया । आधे से अधिक महिलाओं ने बताया की कार्यस्थल का वातावरण प्रजननशीलता को प्रभावित करता है जबकि कुछ ने बताया की प्रभावित नही करता है। अधिकांश महिलाओं ने बताया की घर से कार्यस्थल की दूरी प्रजननशीलता क्षमता को घटाती है। इस प्रकार महिलाओं के प्रजननशीलता प्रतिशत का व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त होता है।

सुझावः

देश का सामाजिक एवं आर्थिक परिप्रेक्ष्य, कार्यकारी महिलाओं को व्यवस्थित एवं व्यवसायिक वातावरण उपलब्ध नही करता है। अतः कार्यकारी महिलाओं को श्रम के अनुकूल पारिश्रमिक मिलना चाहिए।

कार्यकारी महिलाओं को सामाजिक प्रतिष्ठा एवं सम्मान मिलना चाहिए।

कार्यकारी महिलाओं को प्रजननशीलता के सम्बंध में उनको निर्णय लेने की स्वतंत्रता मिलनी चाहिए।

कार्यकारी महिलाओं को गर्भावस्था के दौरान अपने कार्यस्थल से अनेक छुट्टियों को अति आवश्यक रूप से मिलनी चाहिए।

कार्यकारी महिलाओं को कार्यस्थल पर क्रेच की सुविधा अनिवार्य रूप से प्रदान किया जाना चाहिए।

कार्यकारी महिलाओं को परिवार नियोजन के संदर्भ में परिवार का (दखल) हस्तक्षेप समाप्त किया जाए।

कार्यकारी महिलाओं को प्रजननशीलता के सम्बंधित प्रकट होने वाली बाधाओं को परिवार के सदस्यों द्वारा ही निपटाया जाए।

कार्यकारी महिलाओं को भावनात्मक व सामाजिक सहारा प्रदान किया जाना चाहिए।

कार्यकारी महिलाओं को सरकारी योजना का लाभ प्रजननशीलता के आयाम को दृष्टिगत रखते हुए देना चाहिए।

कार्यकारी महिलाओं का राष्ट्रीय महिला आयोग में रजिस्ट्रेशन होना चाहिए।

कार्यस्थल का वातावरण प्रजननशीलता को प्रभावित न करे। इसका ध्यान सहयोगियों को रखना चाहिए एवं अनहोनी होने पर त्वरित कार्यवाही एवं मैकेनिज्म विकसित होना चाहिए।

कार्यकारी महिलाओं के सामाजिक, आर्थिक, प्रजननशीलता सम्बंधी समस्याओं के उन्मूलन के लिए काउंसलिंग सेन्टर खोलना चाहिए ताकि दबाव रहित वातावरण मिल सके।

निष्कर्ष:

निष्कर्ष स्वरूप हम कह सकते है कि कार्यकारी महिलाओं के सामने विविध समस्याओं को संस्मरण मौजूद होते हुए भी परिवार समाज, बच्चों के पालन–पोषण, घरेलू जिम्मेदारियों, कार्यस्थल के वातावरण एवं व्यक्तिगत स्वतंत्रता का सामंजस्य बनाए हुए है।

संदर्भ सूची:

1- गुप्ता, सुभाष चन्द्र (2004); ''वर्किंग वूमेन एण्ड इंडिया सोसायटी'', अर्जुन पब्लिशिंग हाउस, न्यू दिल्ली, पीपी, 78–80.

2- गुप्ता, सुभाष चंद्र (2004), कार्यशील महिलाएँ एंव भारतीय समाज, अर्जुन पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली, पृ. 84.

3- झा, कालीनाथ (2005); मोडर्नाईजिंग वूमेन : सर्चिंग देयर आईडेंटिटिस, रावर पब्लिकेशन. न्यू दिल्ली, पीपी. 147.

4- सिंघाल, तारा (2003); वर्किंग वूमेन एण्ड फैमिली, आरबीएसए पब्लिशर्स, जयपुर, पीपी. 130–136.

5- सिंह, प्रभात कुमार (2000), एक्सपलोटेशन ऑफ ट्राइबल वर्किंग वूमेन जानकी प्रकाशन, नई दिल्ली

6- नागर, सविता (1998). भारतीय समाज में कार्यशील महिलाएँ, जयपुर : क्लासिक पब्लिकेशन।

7- कुमारी, मधु (2007), भारतीय कामकाजी महिलाओं का सामाजिक एवं आर्थिक अध्ययन, नई दिल्ली : जानकी प्रकाशन।